डॉ० राजीव कुमार श्रीवास्तव

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
समन्वयक – उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
नोडल अधिकारी, इण्डियन स्पेस वीक
श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुदिष्टपुरी–रानीगंज
बलिया 277208 (उ०प्र०) भारत

शिक्षा

- एम०ए० (प्राचीन इतिहास–1997) रेल ट्रान्सपोर्ट इकोनॉमिक्स मैनेजमेंट, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
- एम०ए० (समाजशास्त्र–2002)
- एम० फिल० (समाजशास्त्र– शीर्षकः भारतीय प्रशासन एवं वर्तमान सामाजिक सम्बन्ध) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- पी–एच० डी० (समाजशास्त्र) शीर्षक : भारतीय पुलिस प्रशासन एवं वर्तमान सामाजिक सम्बन्ध के प्रति सामान्यजन, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के दृष्टिकोण) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,

प्रशस्ति पत्र

- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली,यूजीसी एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, लंदन (यू०के०) के शैक्षणिक यात्रा के लिए चयनित (21–28 नवम्बर, 2015 तक, डॉ० अम्बेडकर के 125 वीं जयन्ती पर)

सम्मान

- Awarded by I2OR Publication Excellence Award 2018, From Melborn, Austrellia and CII Chandigarh. India
- I20R Excellence International Journal Award 2019
- GLOBAL PUBLISHER AWARD 2021
- GURU International Pride Award 2022- Kathmandu (Nepal)

सम्पादकीय

भारतीय समाज में बाट जोहती नैतिक संस्कृति

भारतीय समाज अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक परंपराओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रहा है। सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहिष्णुता, त्याग, करुणा और पारिवारिक एकता जैसे मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान रहे हैं। प्राचीन काल से ही परिवार, शिक्षा और सामाजिक संस्थाएँ व्यक्ति के चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं, किंतु वर्तमान समय में तीव्र आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद तथा तकनीकी परिवर्तन के प्रभाव से नैतिक संस्कृति अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है।

आज भारतीय समाज में भौतिक सुख–सुविधाओं की दौड़ ने नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ दिया है। सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार चरित्र और सदाचार के स्थान पर धन, शक्ति और प्रदर्शन बनता जा रहा है। भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, असहिष्णुता, हिंसा, सामाजिक वैमनस्य तथा नैतिक पतन की घटनाएँ बढ़ रही हैं। पारिवारिक संबंधों में भी पहले जैसी आत्मीयता और सामंजस्य कम होता दिखाई देता है।

शिक्षा का उद्देश्य भी अनेक बार केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित रह गया है, जबकि नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों के विकास पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा। सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों ने जहाँ ज्ञान और संवाद के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं झूठी सूचनाओं, अशिष्ट व्यवहार तथा सामाजिक विभाजन को भी बढ़ावा दिया है। परिणामस्वरूप समाज में नैतिक संस्कृति मानो पुनः अपने सम्मानजनक स्थान की बाट जोह रही है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के नैतिक चरित्र से निर्धारित होती है। नैतिकता सामाजिक विश्वास, न्याय, समानता और मानवता की आधारशिला है। यदि समाज में नैतिक मूल्य कमजोर होते हैं, तो सामाजिक संस्थाएँ भी कमजोर पड़ने लगती हैं। इसलिए परिवार, विद्यालय, धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों को नैतिक मूल्यों के संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

माता–पिता को बच्चों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहानुभूति और जिम्मेदारी की भावना विकसित करनी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा, नागरिक उत्तरदायित्व तथा जीवन मूल्यों को प्रभावी रूप से सम्मिलित करना आवश्यक है। साथ ही, सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देकर समाज में नैतिक आचरण के आदर्श स्थापित किए जाने चाहिए।

भारतीय समाज की नैतिक संस्कृति आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। भौतिक प्रगति के साथ–साथ नैतिक मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन भी आवश्यक है। यदि परिवार, शिक्षा संस्थान, समाज और शासन मिलकर नैतिकता को जीवन का अभिन्न अंग बनाने का प्रयास करें, तो भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा पुनः सशक्त रूप में स्थापित हो सकती है। नैतिक संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, समरस और विकसित समाज के निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता है

डॉ० राजीव कुमार श्रीवास्तव
प्रधान सम्पादक